

प्रगति ग्रामीण विकास संस्था
बैतूल

वार्षिक रिपोर्ट

1 अप्रैल, 2021 से 31 मार्च, 2022

प्रगति ग्रामीण विकास संस्था, बैतूल जिले के भीमपुर विकास खण्ड के ये गांव पिछड़े, ग्रामीण, और आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र है जिस कारण से यहां पर निवास करने वाले परिवारों के बच्चे जानकारी के अभाव के कारण से शिक्षा से बहुत दूर है, मूलतः यहां पर शिक्षा में अधिक कमी है। ये ग्राम मुख्यतः बैतूल जिला मुख्यालय से लगभग 65 कि.मी. की दूरी पर स्थित है और इसके अलावा यह क्षेत्र पहाड़ी, पथरीला और बंजर है इस कारण से यहां के निवासी केवल बरसात के दिनों में होने वाली फसल का उत्पादन ही ले पाते हैं और बाकी समय में काम करने के लिये ये परिवारों के सदस्यों को बाहर काम करने जाना पड़ता है। संस्था द्वारा पीपलढाना, भाण्डवा, मानकदण्ड में शिक्षा, स्वच्छता, जैविक कृषि के संबंधों में कार्यक्रमों का योजन कर जागरूक कार्यक्रम कर रही है।

इन ग्रामों में आर्थिक परिस्थिति कमजोर होने के कारण से अधिक नहीं पढ़ पाते हैं और बालिकाओं को घर के काम के अलावा खेतों में भी काम करने के लिये जाना पड़ता है जिससे बालिकाओं का भविष्य अंधकारमय था। इस प्रकार के वातावरण में बालिकाओं के हाथ में काम की जगह किताबें देना और बालिकाओं के भविष्य को अंधेरे से बाहर निकालना एक कठिन कार्य है।

जीवन के अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं से जुड़ी व्यवहारिक जानकारी उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया, जिसमें छात्राओं को सामाजिक संबंधों की महत्ता, ग्राम परिवेश अर्थात् पंचायतीराज में महिलाओं की भूमिका का महत्व, सफल जीवन के लिये शिक्षा अर्जन और उसकी उपयोगिता आजीविका व नौकरी के लिये शिक्षा की अनिवार्यता व शत प्रतिशत प्रयास करना, बेहतर स्वास्थ्य के जरिये पढ़ाई को और बेहतर करने के नुस्खे, किशोरी बालिकाओं के स्वास्थ्य संरक्षण में चुनौतियाँ व सावधानियाँ, शिक्षा के अर्जन के साथ साथ जीवन का लक्ष्य तय करना व उसको प्राप्त करने के लिये रणनीति बनाना व सदैव प्रयासरत रहना है। शिक्षा और करियर के प्रति समझ-बूझ कर निर्णय लेना एवं बालिकाओं के स्वास्थ्य पर परम्परागत प्रथाओं का असर, बालिकाओं के स्वास्थ्य पर परम्परागत प्रथाओं का असर, तनाव से निपटना, बालिकाओं के स्वास्थ्य पर परम्परागत प्रथाओं का असर, किशोर और नशीले पदार्थों का सेवन, यौन हमला/यौन शोषण को समझना, आदि जानकारी प्रदान की गई।

विभिन्न शासकीय नौकरियों के लिये छात्राओं की आवश्यक व अनिवार्य शिक्षा में पालकों का योगदान क्या होना चाहिये? किस तरह पालक अपनी बच्चियों को उच्च शिक्षा अर्थात् कॉलेज, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान व कम्प्यूटर शिक्षा संस्थानों से छात्राओं के बल पर नौकरी प्राप्त करने में छात्राओं की मदद करके अपने पालक होने का कर्तव्य पूरा करने व फर्ज निभाने की प्रेरणा दी गयी, जबकि स्त्रोत व्यक्ति द्वारा आई.टी. आई. में छात्र छात्राओं को पढ़ाये जाने वाले तकनीक विषयों इलेक्ट्रिशियन, फिटर, टर्नर, वेल्डर, कारपेंटर, कम्प्यूटर एप्लीकेशन, शार्टहैंड आदि के साथ विभिन्न कालेज कोर्से के बारे में सरल व विस्तृत जानकारी दी गयी।

❖ **स्वास्थ्य स्वच्छता कार्यक्रम :-** ग्राम पीपलढाना, भाण्डवा, झापल, एवं मानकदण्ड में स्वास्थ्य स्वच्छता क संबंध में जानकारी दी गई जो निम्नानुसार है। स्वच्छता व स्वास्थ्य कार्यक्रम के माध्यम से 05 गाँव के प्रतिनिधियों को बैठको प्रशिक्षणों के माध्यम से स्वयं की स्वच्छता व स्वास्थ्य संबंधी आदतों को एवं उसके स्तर में सुधार लाते हुये सम्पूर्ण ग्राम परिवेश की स्वच्छता को बेहतर करने के प्रति जागरूक करने का प्रयास

किया गया जिससे गंदगी व बीमारी के दुष्चक्र में न फँस सके । इस संबंध में स्वच्छता के महत्वपूर्ण सात मुद्दों की जानकारी प्रदान की गई ।

छात्राओं को बतायी गई बातें –



1- प्रतिदिन सुबह उठने के बाद में वह अपने दातों की सफाई अच्छी तरह से करें जिससे दांत साफ होंगे तो उन्हें दातों संबंधी किसी भी प्रकार परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा ।

2- सभी छात्राओं को बताया कि ठण्ड के मौसम में सुबह जल्दी उठकर थोड़ा टहलने जायें । जिससे स्वास्थ्य हमेशा अच्छा रहता है ।

3- ठण्डी के दिनों में घुमने से हमें किसी प्रकार की बीमारी का सामना नहीं करना पड़ता है ।

4- नाखूनों की सफाई समय-समय पर करते रहना चाहिए ।

5- ताजे बने भोजन का उपभोग करे यदि भोजन विशेष प्रकार बदबू आ रही हो तो उस भोजन का

सेवन न करें ।

6- तेज धूप और गर्मी में से आने के तुरन्त बाद में पानी न पिये थोड़े समय रुके उसके बाद में पानी पिये ।

7- तेज धूप में निकलने पहले सिर पर कोई रुमाल जैसा कपड़ा अवश्य लपेटे जिससे आप तेज धूप से बच सकेंगे ।

8- फल का सेवन करे ।

9- हरी और पत्तेदारी सब्जी को अपने भोजन में अवश्य शामिल करें ।

उपलब्धियाँ :-

1. बीमारियों में कमी आयी ।
2. स्वच्छता व स्वास्थ्य के प्रति ग्रामवासी ध्यान देने लगे ।
3. पंचायत की योजना और स्वेच्छा से ग्रामवासी कम लागत के शुष्क शौचालय बनाने की शुरुआत कर चुके हैं । बीमारी में कमी आयी ।
4. स्कूली बच्चों के रहन-सहन व सफाई के स्तर में सुधार हुआ है ।
5. गाँव के हैण्डपम्प व कुओं के आस-पास ग्रामवासी सफाई समय-समय पर करते हैं ।



❖ **जैविक कृषि वर्मीकम्पोस्ट संबंधी कार्यक्रम :** ग्राम भाण्डवा ,पीपलढाना कृषि की उर्वरकता, मिट्टी की उपजाऊ शक्ति में उत्तरोत्तर वृद्धि व जमीन के पोषण तत्वों का संरक्षण, फसल की पैदावार में बढ़ोत्तरी तथा रासायनिक खाद यूरिया, डी.ए.पी. आदि से होनेवाले नुकसान की जानकारी देकर अधिक से अधिक जैविक कृषि को अपनाने के लिये प्रेरित किया गया, इस हेतु केंचुआ पालन हेतु वर्मी कम्पोस्ट इकाई का निर्माण व उसके उपयोग की सूक्ष्म जानकारी दी गयी।



जैविक विधि से पैदा किये गये खाद्य पदार्थ जहरीले कीटनाशकों से मुक्त होते हे साथ ही ये जहरीले कीटनाशक मनुष्य के लिये अत्यन्त हानिकारक है । जैविक खाद्य पदार्थ रासानिक खाद्य पदार्थ रासायनिक खाद्य पदार्थों की अपेक्षा अधिक पौष्टिक तथा उत्तम है । जैविक खाद्य पदार्थ खाने वाले जीवधारियों में अपेक्षाकृत अधिक लाभ दिखाई देते है वे मुख्यतः कम बीमार पड़ना ,बीमारी में अपेक्षकृत शीघ्रता से स्वस्थ

होना ,अधिक देर तक काम करना ,थकान कम होना ,आलसी न होना इत्यादि ।

जैविक खेती का उच्छेय :-

1. स्वस्थ और पौष्टिक भोजन का लगातार और पर्याप्त उत्पादन ।
2. फसलों को इस तरह से उगाना कि फसलों के विकास को उनके सहज व्यवहार और परिस्थितियों में हस्तक्षेप किये बिना बनायें रखा जायें ।
3. प्रदूषण ,मिट्टी के कटाव और मिट्टी के क्षरण को कम करने के लिये ।
4. फसलों की जैविक गतिविधियों के लिये प्राकृतिक कीटनाशकों के माध्यम से इष्टतम दीर्घकालिक निषेचन प्रदान करना ।
5. पौधों और जानवरों के बीच आनुवंशिक और जैविक विविधता को बनायें रखना ।
6. पुनर्चक्रण सामग्री के उपयोग को बढ़ावा देना ओर उद्योगों में नवीकरणीय स्रोतों पर भरोसा करना
7. फसलों को कीटों ओर खरपतवारों से बचाने के लिये जैविक उत्पाद तैयार करना ।

जैविक खेती के प्रकार

जैविक खेती के दो प्रमुख प्रकार हैं:-

1. **शुद्ध जैविक खेती** :- शुद्ध जैविक खेती सभी सिंथेटिक और अप्राकृतिक रसायनों से रहित होती है । गाय की खाद, और पशु उप-उत्पादों से प्राप्त उर्वरक और कीटनाशक ,जैसों अस्थि भोजन या रक्त भोजन ।

2. **एकीकृत जैविक खेती** :- एकीकृत कीट प्रबंधन के माध्यम से पोषक तत्वों का एकीकृत उपयोग जैविक खेती में करते है । इस प्रकार में प्राकृतिक और नवीकरणीय साधनों के माध्यम से फसल उगाना शामिल है ।

जैविक खेती के तरीके

निम्नलिखित कुछ विधियाँ है जिनका उपयोग कई प्रकार की जैविक खेती में किया जाता है ।

1. **क्रॉप रोटेशन**:- इस तकनीक का मतलब है कि हर साल एक ही फसल को एक खेत में उगाने के बजाय खेतों को वैकल्पिक रूप से फसलों के लिये इस्तेमाल किया जाता है । रोटेशन मिट्टी में कई पोषक तत्वों को जोड़ने और कीड़ों और परजीवियों के चक्र को मारने में मदद करता है ।
2. **मल्लिचिंग** : कई किसान मिट्टी के उपर जैविक सामग्री की एक परत डालकर और खरपतवारों को हटाकर मिट्टी के स्वास्थ्य को बढ़ाकर मल्लिचिंग का अभ्यास करते हैं । यह तकनीक खरपतवारों की रोकथाम में मदद करती है ,मिट्टी में नमी को पकड़ती है जिससे फसल उत्पादन में वृद्धि होती है ।



3. **हरी खाद**:- किसान इस तकनीक का अभ्यास अनाज के बीज ,तिलहन आदि का उपयोग करके कवर फसले उगाते है ,और फिर उन्हें वापस मिट्टी में जोतते है । यह मिट्टी के कठोर भाग में प्रवेश करता है पोषण तत्वों को लाता है और मिट्टी में वातन को बढ़ाना ।

जैविक खेती के लाभ :-

1. भूमि की उपजाऊ क्षमता में वृद्धि हो जाती है ।
 2. सिंचाई अंतराल में वृद्धि होती है ।
 3. रासायिक खाद पर निर्भरता कम होने से लागत में कमी आती है ।
 4. फसलों की उत्पादकता में वृद्धि ।
 5. बजार में जैविक उत्पादों की मांग बढ़ने से किसानों की आय में भी वृद्धि होती है ।
- ❖ **ग्राम स्वराज व्यवस्था** :- ग्राम स्वराज व्यवस्था के अन्तर्गत भीमपुर विकासखण्ड के गावों के प्रतिनिधियों सरपंच ,पंच उपसरपंच, पंचायत सचिव ,कोषाध्यक्ष महिला प्रतिनिधियों को ग्राम स्वराज व्यवस्था शिक्षा, स्वास्थ्य समग्र स्वच्छता कार्यक्रम ,सरकार के नीति नियमों तथा सरकार की ग्राम स्वराज रूपी सरल शासन प्रणाली को सरल रूप से बताते हुए जन समुदाय व प्रतिनिधियों में उत्तरदायित्व को लेकर उनमें जागरूकता पैदा करना जिससे ज्ञान व समझ के आधार पर उत्साह एवं प्रेरणा स्वरूप वे स्वयं निर्णय

लेने की क्षमता को विकसित कर सके एवं सरकार के द्वारा समय समय पर लागू की जाने वाली विभिन्न लाभकारी योजनाओं से लाभ लेकर अपना आर्थिक विकास करना व वास्तविक जरूरतमंदों को उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु जानकारी व संसाधन उपलब्ध कराने के विषय में गहनता से बताया गया । जिससे उनमें स्वयं के सहयोग एवं सामुदायिक सोच को विकसित किया जा सके।



उपलब्धियाँ :-

1. ग्राम सभा की बैठके नियमित होने लगी बैठकों में उपस्थिति बढ़ी ।
2. सरपंचों की सचिव व शासकीय कर्मचारियों पर से निर्भरता में कमी आयी ।
3. सरकार की लाभकारी योजनाओं से ग्रामवासी लाभार्जन लेने लगे हैं ।
4. जल, जंगल, जमीन का महत्व समझते हुए ग्रामवासी कृषि भूमि को सुधारने, पानी रोकने व वृक्षारोपण करने कार्य करने लगे हैं ।

सचिव
प्रमोदकुमार नाईक